© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 04 , Issue : 03 | January – March 2018

गोविन्द मिश्र जी के पुरस्कार तथा सम्मान : एक विवेचना

सुरेश कुमारी, शोध छात्रा
हिन्दी विभाग जम्मू विश्वविद्यालय

सार

परमपिता परमात्मा ने सृष्टि की रचना करते समय मनुष्य को बुध्दिमान प्राणी के रूप में सृजित किया है। मनुष्य अन्य प्राणियों से समझदार, जागरूक, जिज्ञासु एवं श्रेष्ठ है। मानव प्रकृति का सबसे अनुपम उपहार है, मनुष्य में सोचने, समझने और ग्रहण करने की सर्वोतम शक्ति निहित है। यह शक्ति उसे उसी परमपिता ने प्रदान की है। उसी शक्ति के बल पर वह अन्य प्राणियों पर अपना प्रभुत्व स्थापित किये है। इसी आधार पर उसने सिंह एवं हाथी जैसे खूंखार तथा विशाल बल वाले प्राणियों को भी कैद कर रखा है। सभी प्राणियों में आहार, निद्रा, भय और मैथुन (सन्तानोत्पति) की प्रक्रियाएँ समान रूप से दृष्टिगोचर होती है, किन्तु साहित्य के क्षेत्र में संगीत और कला से विहीन मनुष्य पुच्छ–विषाण रहित माना गया है।

ISSN 2454-308X
9 770024 543081

मुख्य शब्द : प्रक्रियाएँ, मनुष्य, बुध्दिमान आदि।

परिचय

गोविन्द मिश्र से सम्बन्धित पर्याप्त जानकारी हमें अनेकानेक साहित्यकारों द्वारा लिये गये इनके साक्षात्कारों से उपलब्ध होती है। गोविन्द मिश्र के माता–पिता प्राचीन भारतीय परम्परा के रुढ़िवादी अनुयायी थे। इसी रूढ़िवादिता के कारण वे इनकी माँ को अपनी जागीर समझते थे। परिणामस्वरूप परिवार में कलह उत्पन्न हो जाती थी। कई–कई दिनों तक वे आपस में बोलना चालना बन्द कर देते थे। इनके पिता इनकी माँ पर कभी–कभी असहनीय अत्याचार भी कर बैठते थे, परन्तु वे उसे पत्नी धर्म एवं स्त्री कर्तव्य समझकर सहन करती रहती थी।

गोविन्द मिश्र ने सदैव यथार्थ को व्यक्त किया है अतः उन्होंने यथार्थता एवं वास्तविकता को अपनी कृतियों में खुले रूप से व्यक्त करने का पूरा प्रयास किया है। सत्यता को व्यक्त करने में उन्हे, किसी प्रकार की झिझक या संकोच नहीं थी।

गोविन्द मिश्र का बचपन आर्थिक परेशानियों मे व्यतीत हुआ। इनके बचपन के सम्बन्ध चन्द्रकांत बांदिवडेकर ने अपनी पुस्तक गोविंद मिश्र सृजन के आयाम में इस प्रकार व्यक्त किया

माता–पिता :

गोविन्द मिश्र के माता पिता एक मध्यमवर्गीय संस्कार सम्पन्न ब्राम्हण परिवार से थे माधव प्रसाद मिश्र इनका नाम था। ये एक प्राइमरी स्कुल में शिक्षक के पद पर नियुक्त थे। गोविन्द मिश्र की माता का नाम था श्रीमती सुमित्रा देवी मिश्र। इनकी माँ भी एक प्राथमिक स्कूल में शिक्षिका थी। कहने का तात्पर्य यह है कि इनके माता पिता दोनों व्यवसाय से अध्यापक थे।

इसके अतिरिक्त इनके पिता श्री माधवप्रसाद मिश्र जी धार्मिक विचारों के थे। वे प्रतिदिन मंदिर में पूजा पाठ भी करते थे। आय का स्त्रोत अधिक न होने के कारण जीवन कष्टमय था। कहने का अर्थ यह है कि इनका पारिवारिक जीवन आर्थिक कठिनाईयों में गुजर रहा था। इनके पिता का स्वभाव कठोर था। ग्रामीण परिवेश में निवास होने के कारण गोविन्द मिश्र के जीवन में बचपन से ही ग्रामीण परिवेश की छाप पड़ गयी थी।

पुरस्कार तथा सम्मान :

गोविंद मिश्र जी को अब तक अनेक पुरस्कारों एवं सम्मानों से विभूषित किया जा चुका है। संक्षेप में इन पुरस्कारों का विवरण इस प्रकार है–

1. श्रेष्ठ लेखक के लिए 'लाल पीली जमीन' आर्थस गिल्ड ऑफ इण्डिया पुरस्कार।
2. भारतीय भाषा परिषद कोलकाता द्वारा के. के. बिड़ला फाउण्डेशन की तरफ से।
3. सन 1988 ई. में 'पाँच आंगनों वाला घर' उपन्यास के लिए व्यास सम्मान।
4. उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान 'हुजूर दरबार' के लिए प्रेमचंद पुरस्कार।
5. साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा सन 2008 ई. का साहित्य अकादमी पुरस्कार 'कोहरे में कैद' उपन्यास के लिए प्राप्त हुआ है।
6. राष्ट्रपति द्वारा सुब्रमण्यम भारती सम्मान से सम्मानित।

प्रतिभाशाली व्यक्तित्व :

मिश्र जी का स्वभाव प्रतिभाशाली रहा है। उनके गुरू देवेन्द्रनाथ खरे जी ने अपने अनेक शिष्यों में से चुनकर इनके नाम पर 'बालक गोविंद' नामक लेख लिखा था। यहाँ तक कि उन्होंने इनके प्रिय छात्र होने के कारण अपने अंक में समेट लिया था। आगे चलकर इनकी प्रत्येक गतिविधी पर नजर रखकर इनका मार्गदर्शन भी किया। दसवी कक्षा के 8 प्रतिभाशाली और परिश्रमी छात्रों में इनकी गिनती थी जिन्हें प्रथम श्रेणी प्राप्त हुई। उनका कथन है कि – " मेरी जिजीविषा ही साहित्यकार होने के दम पर है, . . . अगर संवेदना होती और सिर्फ अभिव्यक्तन न दे पाने का संकट होता . . . तो शायद अध्यापक होता।"

निभिकता :

गोविन्द मिश्र जी ने निभीकता के साथ यथार्थ को उजागर किया है यह इनके निभीकपन को स्पष्ट करता है। इनकी कृतियाँ इसका प्रमाण है। डॉ. प्रमिला त्रिपाठी अपनी पुस्तक के प्रस्तावना में इस तथ्य की पुष्टि करती है कि- "उन्होंने अपने उपन्यास कहानी और निबन्ध साहित्य के द्वारा जो क्रांति और परिवर्तन का विरोध और संघर्ष का स्वर उठाया है, वह वस्तुतः आधुनिक युग के अनुरूप ही है। युगान्तकारी साहित्य सृजन की प्रेरणा से गोविंद मिश्र जी ने साहित्य के विविध रूपों को ग्रहण किया है। वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक प्रभाव को, जो साहित्य को प्रभावित कर रहा है, निभिक मन से अपने साहित्य में स्थान दिया है।" अतः सिध्द होता है कि मिश्र जी समय के पारखी तथा साहित्य मर्मज्ञ है। सम सामायिक परिस्थितियों, परिवर्तित वातावरण तथा बढ़ती राजनीति का उन्होने खूब खुलासा किया है। इससे मिश्र जी का निडरपन सिध्द होता है।

साहित्यिक रूचि :

अपने विद्यार्थी जीवन से ही गोविंद मिश्र जी ने धार्मिक-पुस्तकों एवं पुराणों का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया था। जब वे इण्टर के छात्र थे तभी दो-तीन कहानियाँ लिखी थी। उनके नाम इस प्रकार है-मेरे आराध्य न आये, पूर्णमासी का भोग तथा चन्दनियाँ अरज करें आदि। संस्कृत विषय में इनकी विशेष रूचि थी। उनकी रचनाशीलता की समीक्षा करते हुए डॉ. भगवानदास वर्मा ने लिखा है कि- "मिश्र जी की रोमानी दृष्टि जैसा कि वे कबूल करते है, विक्टर हुगो की रोमानी दृष्टि है जिसमें स्थितियों से पलायन नहीं, पर उन्हीं के मध्य सृजनशील संभावनाओं की तलाश है।" गोविंद मिश्र जी मानते है कि साहित्य गतिशील चेतना है। साहित्य की गति नहीं रूकनी चाहिए, क्योंकि साहित्य से सरोकार नहीं मर सकते। प्रत्येक पीढ़ी की संवेदनात्मकता भावनाएँ, संवेदनाएँ, माँ-बाप प्रेम, समाज, समाज का संघर्ष एवं आर्थिक दबाव आदि को नये नजरियें से देखता है। यदि वह पीढ़ी तेजी से रिऐवेट करती है तो साहित्य में वह दृष्टिगोचर होना चाहिए।

उपसंहार

गोविंद मिश्र जी यायावरी जीवन व्यतीत किया है। वैसे भी भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में कार्यरत पदाधिकारियों को यह सुविधा सफलता से उपलब्ध हो जाती है। मानसिक विकास, सौन्दर्यबोध, तथा ज्ञान पिपासा की तृप्ति हेतू मनुष्य एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा प्राचीन काल से करता आ रहा है। इस

संदर्भ में डॉ. ओमप्रकाश सिंघल का कथन है कि–'देश विदेश के विभिन्न स्थानों की यात्रा से हमें न केवल अनुभूत वस्तुओं, दृश्यों एवं पदार्थों का ज्ञान प्राप्त होता है, अपितु ऐसे कटु–मधुर अनुभव भी प्राप्त होते है जो हमारी जीवन दृष्टि को व्यापकता प्रदान करते है।" स्वातंत्रयोत्तर काल में गोविंद मिश्र जी का यात्रा साहित्य समकालीन यात्रा साहित्यकारों में अपनी अलग विशेषता रखता है। इनके यात्रा साहित्य में स्वाभाविक रूप से देशी एवं विदेशी समाज, संस्कृति, लोक संस्कृति और लोक जीवन का चित्रण कलात्मक रूप में प्रस्तुत हुआ है।

ग्रंथ सूची:

[1] गोविन्द मिश्र: सृजन के आयाम, सं. चन्द्रकान्त बांदिवडेकर, पृ.सं. 11
[2] गोविन्द मिश्र और उनकी साहित्य साथना, डॉ. प्रमिला त्रिपाठी, पृ.सं. 22
[3] लेखक की जमीन (जब जैसे जो होता चला), पृ.सं. 89
[4] गोविन्द मिश्र और उनकी साहित्य साधना, डॉ. प्रमिला त्रिपाठी, पृ.सं. 23
[5] यात्रा साहित्यकार गोविन्द मिश्र, डॉ. प्रकाश मोकाशी, पृ.सं. 17, 18
[6] गोविन्द मिश्र और उनकी साहित्य साधना, डॉ. प्रमिला त्रिपाठी, पृ.सं. 33
[7] डॉ. प्रीति प्रभा गोयल – भारतीय संस्कृति ,राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, प्रथम संस्करण ,पृ. सं. 10
[8] गोविन्द मिश्र – सान्निध्य–साहित्यकार,वाणी प्रकाशन,नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2003,पृ. सं. 69